दिनांक : 29 जनवरी, 2014

क्या एक सफल मुख्यरमंत्री का अर्थशास्त्री होना जरुरी है ?

– अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

वित्त मंत्री पी चिदम्बरम ने टिप्परणी की है कि श्री नरेन्द्र मोदी जितना अर्थशास्त्रं जानते हैं उसे एक डाक टिकट के पीछे लिखा जा सकता है। यह टिप्पणी कुशाग्र बुद्धि वाले अर्थशस्त्र के एक छात्र ने की है, जिसे भारत की अर्थव्यवस्था को 5 प्रतिशत से नीचे लाने का श्रेय दिया जा सकता है।

श्री चिदम्बरम का मानना है कि वह अर्थशास्त्र के पंडित हैं। यह एक अलग बात है कि अर्थव्यवस्था के प्रबंधन के लिए यूपीए की ड्रीम टीम के अन्य सदस्यों, के साथ उन्होंने देश को कोई सपना नहीं बल्कि भयावह अनुभव दिया है। राजनैतिक प्रशासक जो अर्थव्यवस्था का प्रबंधन करते हैं, उनकी अकादमिक योग्याता से उनकी पहचान नहीं होती। बल्कि उनकी पहचान उनके कामकाज और प्रदर्शन के जो निशान वह छोड़ जाते हैं उनसे होती है।

श्री पी. वी. नरसिंह राव और श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अर्थशास्त्र में विद्वता के स्तर का कभी कोई दावा नहीं किया। सरकार में विशेष कार्यों के लिए विशेषज्ञ हमेशा उपलब्ध रहते हैं। यह अलग बात है कि कांग्रेस पार्टी उन्हें वित्त मंत्री बनाना ही पसंद करती है। राजनैतिक नेताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे नेतृत्व प्रदान करेंगे, अर्थव्यकवस्था के प्रबंधन के लिए निर्णय लेने की जरुरत होती है। उन्हें राजनैतिक अर्थव्यरवस्था के प्रबंधन की मोटी जानकारी होनी चाहिए। उनके लिए जरुरी है कि वे आर्थिक मसलों पर आम सहमति बनाएं। अगर आम सहमति नहीं बन रही है तो उन्हें खुद दृढ़तापूर्वक अपनी बात कहनी चाहिए और आलोचकों को खरिज कर देना चाहिए। श्री राव और श्री वाजपेयी में ये विशेषता थी। यही कारण है कि उन्होंने इतिहास में विशेष स्थाान दिया जाता है।

श्री नरेन्द्र मोदी अर्थशास्त्री होने का दावा नहीं करते। जिस तरीके से उन्होंने पिछले 12 वर्षों में गुजरात में शासन किया है उसके निश्चितता और निर्णय लेने की क्षमता का पता लगता है। गुजरात भारत का औद्योगिक केन्द्र है। यह निर्माण करने वाला राज्य है। उसकी कृषि अर्थव्यरवस्था् दहाई के आंकड़े तक पहुंच चुकी है। उसकी विकास दर देश के अन्य भागों की तुलना में अधिक है। श्री मोदी के विपरीत श्री चिदम्बरम और उनके प्रधानमंत्री में अपने आलोचकों को खारिज करने की क्षमता नहीं है। उनकी पार्टी के नेतृत्वन द्वारा जब उन्हें अप्रचलित सुझाव दिया जाता है तो वे रुकावट डालते हैं। पर्यवेक्षक आज श्री मोदी के बारे में श्री चिदम्बरम की राय से वास्ता नहीं रखते। बल्कि निवेश का चक्र फिर से शुरु होने को सरकार में बदलाव के रुप में देखा जा रहा है, जिसमें डा. सिंह और श्री चिदम्बरम जाएंगे और श्री मोदी आएंगे।

श्री मोदी ने गुजरात में आर्थिक कार्यों में तेजी लाकर अपनी स्पष्टता और प्रभावशीलता का परिचय दिया है। उनकी क्षमता को श्री चिदम्बरम के प्रमाणपत्र की कोई जरुरत नहीं है। लेकिन क्या श्री चिदम्बरम अपने विवेक से अपने अर्थशास्त्र के ज्ञान और प्रधानमंत्री पद के अपने वास्तविक उम्मीदवार श्री राहुल गांधी की समझ से अवगत कराएंगे।

*****